Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre

ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.05.02.04
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

प्राचीन भारत में सूर्य प्रतिमा का विकास

डा० धर्मेन्द्र कुमार तिवारी (विषय विशेषज्ञ)
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ |
मेल- dktiwari143lko@gmail.com

मूर्तिकला एक ऐसी विधा है जिसमें लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति के साथ किसी भी वस्तु की तद्वत अनुकृति प्रस्तुत की जा सकती है | कलाकार अपनी क्षमता और कल्पना के अनुसार उसमें सौन्दर्य और रस दोनों का तालमेल समानता के साथ प्रस्तुत कर सकता है | मूर्तिकला की उद्भावना मनुष्य के मस्तिष्क में उसके सांस्कृतिक जीवन के विकास के आरंभ काल में हो गई थी | उस काल की मूर्तिकला के भारतीय नमूने अभी तक नहीं प्राप्त हुए हैं, पर अन्यत्र वे देखे और पहचाने गए हैं | इस देश में मूर्तिकला के प्राचीनतम नमूने हड़प्पा संस्कृति के अवशेषों में ही मिले हैं | वहां वे पत्थर, धातु और मिटटी के माध्यमों में प्रस्तुत किये गये हैं | कालांतर में मानव ने लगभग प्रकृति के समस्त रूपों में देवत्व का आरोपण कर उनकी छत्रछाया में रहने हेतु मानव रूपों में उनकी कल्पना कर मूर्तियों / प्रतिमाओं का रूप दिया जो कि निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती गई | इसी सन्दर्भ में भारतीय देवताओं में सूर्य की उपासना का प्रचलन भी काफी प्राचीन है जो प्रारंभ में विभिन्न प्रकार के प्रतीकों से चलकर निरंतर प्रगति करता हुआ विशाल मंदिरों और एक बड़े सम्प्रदाय के रूप में प्रतिष्ठित हो गया | प्रस्तुत लेख में प्रतीकों से लेकर प्रतिमाओं तक विभिन्न कालों में सूर्य पूजा के विकास को दर्शाने का विनम्र प्रयास किया गया है |

सूर्य सम्बन्धी किसी सम्प्रदाय के उद्भव और विकास के पहले भारतीय कला में सूर्य का चित्रण चक्र, वर्तुल स्वर्ण - पत्र, कमल आदि प्रतीकों के माध्यम से हुआ | इन प्रतीकों का प्रयोग वैदिक कर्मकान्डियों द्वारा यज्ञों के अवसर पर किया जाता था |[1] वैदिक कल में सूर्य कल्पना मानव रूप में अवश्य की गई किन्तु उसे मूर्ति रूप देने का प्रमाण नहीं मिलता | उत्तर वैदिक काल में अग्नि चयन के समय स्वर्ण से निर्मित मंडल की स्थापना सूर्य के प्रतीक रूप में की जाने लगी थी | वस्तुतः सूर्य के भौतिक रूप की अभिव्यक्ति मंडल या चक्र से ही होती है | सूर्य का यह आरंभिक रूप भरतीय कला में बराबर बना रहा |[2] साम्ब पुराण में संदर्भित है कि पहले सूर्य की प्रतिमा नहीं थी और उसकी पूजा मंडल में ही होती थी | आकाश में स्थित सूर्य मंडल कि भांति ही सूर्य पूजा के लिए मंडल का निर्माण कर लिया जाता था | तत्पश्चात

Received: 05.07.2022 **Accepted:** 24.08.2022 **Published**: 25.08.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 05, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.05.02.04
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

सर्वलोकहितार्थ जब विश्वकर्मा ने पुरुषाकार सूर्य की प्रतिमा निर्मित की तभी से घरों और मंदिरों में सूर्य प्रतिमाओं की स्थापना होने लगी |[3] मानव रूप में सूर्य का चित्रण मौर्य - शुंग काल (लगभग द्वितीय शती ईसा पूर्व) से आरंभ हुआ |[4] इसके पहले मंडलाकार सूर्य की ही पूजा प्रतीक रूप में होती थी | यही सूर्य का प्राचीनतम प्रतीक है | सूर्य चक्र का सन्दर्भ ऋग्वेद के कई मन्त्रों में दृष्टव्य[5] है, जो मंडल का ही द्योतक प्रतीत होता है | शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित है कि स्थंडिल पर सूर्य के प्रतिनिधित्व हेतु सुवर्ण का गोल टुकड़ा रखा जाना चाहिए |[6] भारतीय ऐतिहासिक युग के कुछ प्राचीनतम अवशेषों - आहत (पंचमार्क्ड) और ढली (कास्ट) मुद्राओं में ऐसे प्रतीक मिलते हैं |[7] इन प्रतीकों पर अंकित चक्रों (छह अरों वाला मंडल) को सूर्य का ही चिन्ह माना गया है | पंचाल के सूर्यमित्र और भानुमित्र नामक मित्र (वंशीय) शासकों की जनपदीय मुद्राओं पर सूर्य बिम्ब का स्पष्ट अंकन विद्यमान है | यहाँ सूचीयुक्त वेदिका स्तंभों के मध्य एक स्थंडिल पर किरणावली से युक्त सूर्य बिम्ब को स्थित दिखाया गया है | प्रो. रामाश्रय अवस्थी भी इन शासकों की मुद्राओं के पृष्ठ भाग पर अंकित चिन्हों को सौर चक्र मानते हैं |[8] सूर्य का दूसरा प्रतीक कमल है | सूर्योदय के साथ कमल का खिलना, उसके साथ विकसित होना और उसके अस्त होने पर संकुचित हो जाना कमल का सूर्य से प्रगाढ़ सम्बन्ध सिद्ध करता है | किरणावली से युक्त सूर्य बिम्ब खिले हुए कमल से अद्भुत समानता रखता है | इस समानता के कारण ही देव मूर्तियों के प्रभामंडल को कमालाकृति के माध्यम से अंकित किये जाने की परम्परा चली | प्राचीन मुद्राओं पर अंकित विकसित कमल निश्चित रूप से ही सूर्य का प्रतीक है |[9] सूर्य से सम्बद्ध होने के कारण ही सूर्य प्रतिमाओं में प्रारंभ से ही उसे हांथों में कमल धारण किए हुए चित्रित किया जाता रहा है |

मानव मस्तिष्क निरंतर अग्रसोची और प्रगतिशील रहा है| जब उसे अपने ईष्ट देवोपासना में प्रतीकों का माध्यम लघु प्रतीत होने लगा तो उसने उन्हीं देव को मानवाकृति रूप दे दिया जो उसे अपनी देवोपासना का एक सशक्त माध्यम लगा | सूर्य प्रतिमा का प्राचीनतम विवरण वृहत्संहिता[10] में प्रतिमा लक्षण के रुप में उपलब्ध है | जहां कुंडल, हार तथा मुकुट से सुशोभित कमल की द्युति और मुस्कुराते प्रसन्न सूर्यदेव उदीच्य वेश, कंचुक तथा अव्यंग धारण किए, पैरों से वक्ष तक चोलक से ढके हुए और हांथों में पद्म लिए हुए चित्रित हैं | यहाँ सूर्य के रथ, अश्वों और अन्य अनुचरों का कोई उल्लेख नहीं है | विष्णुधर्मोत्तरपुराण[11] में सूर्य प्रतिमा लक्षण का विस्तृत विवरण उपलब्ध है | जिसके अनुसार सिंदूरी प्रभा वाले, सभी आभूषणों से युक्त, स्मश्रयुक्त, कवचधारी तथा चतुर्भुज सूर्य उदीच्य वेश में हों और अपने दाएं-बाएं हांथों

Received: 05.07.2022 **Accepted:** 24.08.2022 **Published**: 25.08.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre

ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.05.02.04
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

में पुष्पमाला के रूप में बनी रश्मियाँ धारण किए हुए हों | विश्वकर्माशिल्प में भी सूर्य प्रतिमा का विस्तृत विवरण मिलता है |[12] भारतीय कला स्थित सूर्य विग्रह में सूर्य चित्रण का प्रारम्भ अधिक विलम्ब से नहीं हुआ, यद्यपि ऐसे प्रारम्भिक चित्रण बौद्ध धर्म से ही सम्बंधित रहे |[13] ईसा पूर्व काल की सर्वांग सुन्दर सूर्य प्रतिमा बोधगया के एक स्तम्भ पर अंकित है | इसमें सूर्य एकचक्रचतुरास्व रथ पर घोड़ों की रास थामें आरुढ़ हैं | उनके पार्श्व में खड़ी दो स्त्रियाँ बाण चलाती हुई दिखाई गई हैं | इनकी पहचान सूर्य देवता से सम्बद्ध ऊषा तथा प्रत्यूषा से की जाती है | रथ के पार्श्व में बनी मानव आकृतियाँ संभवतः अंधकार की प्रतीक हैं, जिन पर प्रात:काल की देवियाँ शरसंधान कर रही हैं |[14] इस सन्दर्भ में प्रो. रामाश्रय अवस्थी मानते हैं कि - "यह ऊषा और प्रत्यूषा का प्राचीनतम निदर्शन है और सूर्य के इस चित्रण का आधार ऋग्वेद का वह वर्णन है जहाँ वे एक, सात अथवा अगणित अश्वों द्वारा चालित रथ में स्थित वर्णित हैं |"[15] ईसा पूर्व काल में इस वर्ग की सूर्य प्रतिमाओं का अंकन महाराष्ट्र में भाजा की गुफा तथा उड़ीसा की अनंतगुफा में भी किया गया है | इसी परम्परा में कानपुर जनपद के लालभगत नामक स्थान से प्राप्त एक स्तम्भ पर भी सूर्य का ऐसा ही अंकन है, किंतु इस कृति का समय ईसा की द्वितीय शती है | इन कृतियों में अंधकार के प्रतीक के रूप में दानव आकृतियाँ रथ के नीचे दिखाई गयी हैं |[16] बौद्ध और जैन स्थलों पर प्राप्त इन कृतियों से यह प्रमाणित होता है कि सूर्य को सभी सम्प्रदायों में महत्ता प्राप्त थी |

मानवकार रूप में सूर्य-प्रतिमा का निर्माण मौर्य-शुंग काल से आरम्भ हुआ | पटना से प्राप्त मिटटी के एक ठीकरे पर चार घोड़ों के रथ पर आरूढ़ आकृति की पहचान सूर्य से की गई है |[17] बंगाल में चन्द्रकेतुगढ़ से एक रोचक मिट्टी की शुंगकालीन मूर्ति मिली है, जिसकी पहचान कतिपय विद्वानों ने सूर्य से की है | यहाँ सूर्य चार घोड़ों के रथ पर बैठे हैं और उनके दोनों ओर नारी आकृतियाँ हैं |[18] उपर्युक्त प्रतिमाओं के बाद निर्मित सूर्य प्रतिमाएं प्रचुर विदेशी प्रभाव से युक्त नए प्रकार की हैं | इस सन्दर्भ में प्रो. के. डी. बाजपेई का मानना है कि सर्वप्रथम सूर्य प्रतिमाओं का जन्म ईरान में हुआ, जहाँ वे प्रभावशाली शासक के रूप में बनाई जाती थीं | इन्हें शिरस्त्राण, कवच, अधोवस्त्र के साथ उपानह (जूते) भी पहनाए जाते थे | ईरान तथा मध्य एशिया में अधिक सर्दी के कारण यह वेशभूषा आवश्यक थी | पेशावर, तक्षशिला, मथुरा आदि में सूर्य की ऐसी अनेक पाषाण मूर्तियाँ मिली हैं, जिनमें सूर्यदेव को खड़े या बैठे हुए उक्त वेशभूषा में दिखाया गया है | उत्तरी क्षेत्रों (ईरान तथा मध्य एशिया) में यह वेशभूषा बहुत प्रचलित थी | इसी से भारत में इसे उदीच्य वेश की संज्ञा दी गई है | इस प्रकार की

Received: 05.07.2022 **Accepted:** 24.08.2022 **Published**: 25.08.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre

ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.05.02.04
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

प्रतिमाओं में सूर्य को दो या चार घोड़ों के रथ पर राजवेश में आसीन दिखाया गया है | बाद की मूर्तियों में घोड़ों की संख्या सात हो गई, जो सूर्य किरणों के सात मुख्य रंगों की द्योतक हैं |[19] शाकद्वीपी (ईरानी) मग सूर्य पूजा के विशेषज्ञ माने जाते थे | कृष्ण तथा जाम्बवती के पुत्र साम्ब ने मंदिर में सूर्य स्थापना एवं पूजा हेतु उन्हें आमंत्रित किया था | सूर्य को मनोहर मानव रूप देने का श्रेय विश्वकर्मा, जिन्हें सृष्टा भी कहा गया, को दिया गया है |मग ब्राह्मणों की तरह विश्वकर्मा को भी ईरान से सम्बद्ध माना गया है |[20] विदेशी प्रभाव से युक्त प्रतिमाएं ईसा की प्रारंभिक सदियों में निर्मित गान्धार और विशेषतया मथुरा से उपलब्ध होती हैं | गान्धार से प्राप्त काले - स्लेटी पत्थर में सूर्य चार अश्वों वाले रथ पर बैठे अंकित हैं | वे उपानह (बूट) धारण किए हुए हैं और उनके प्रत्येक ओर एक अनुचरी है | मथुरा की प्राचीन (कुषाणकालीन) सूर्य प्रतिमाओं में एक प्रतिमा विशेष उल्लेखनीय है, जिसमें सूर्य चार अश्वों और एक चक्र वाले रथ पर आसीन हैं | उनके दाएं हाँथ में एक कमल-कलिका और बाएं में एक छोटी सी खड्ग है | उनके पीछे प्रभामंडल है और वे चोलक तथा उपानह धारण किए हुए हैं |[21] इस उपानह के सम्बंध में डॉ० नीलकन्ठ पुरूषोत्तम जोशी कहते हैं कि-"सूर्य के जूतों को हम आसानी से नहीं पचा सके, उनके जूतों को हमने जूते नहीं कहा जबकि बनाया उन्हें जूते ही |"[22] विदेशी प्रभाव से युक्त सूर्य प्रतिमाओं के ऐसे चित्रण उत्तर भारत में गुप्तकाल के अंत तक होते रहे | पूर्व गुप्तकालीन सूर्य प्रतिमाएं कुषाणकालीन सूर्य-प्रतिमाओं के सदृश हैं किन्तु उन्होंने अब नया रूप लेना प्रारंभ कर दिया था |[23] गुप्तकाल सूर्य-प्रतिमा के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है | इस काल में सर्वप्रथम पद्मधारी सूर्य को सात घोड़ों के रथ पर आरुढ़ दिखाया गया है | ऐसी कृतियों में प्रायः अरुण उपस्थित हैं (सप्ताश्व रथ की कल्पना मूलतः वैदिक है) | इस काल में सूर्य को कमल पुष्प लिए हुए विष्णु के समान किरीट धारण किए हुए प्रदर्शित किया जाने लगा | इन तत्वों से प्रकट होता है कि गुप्तकालीन शिल्पी जहाँ कुषाण कालीन अथवा ईरानी तत्वों से प्रभावित हो रहे थे वहीं सूर्य की वैदिक अवधारणा को मूर्त रूप देने के लिए उत्सुक थे |[24] पूर्ण विकसित मध्ययुगीन सूर्य-प्रतिमाओं में दण्ड और पिंगल, ऊषा और प्रत्यूषा तथा अरुण और सप्ताश्वरथ के अतिरिक्त सूर्य पत्नियों राज्ञी, निक्षुभा, छाया, सुवर्चसा, तथा भू-देवी महाश्वेता और कभी-कभी दो अश्विन देवताओं के चित्रण देखते बनते हैं | इन विशिष्टताओं से युक्त मध्ययुगीन अनेक सूर्य मूर्तियाँ पूरब से पश्चिम तक समस्त उत्तर भारत में उपलब्ध हुई हैं |[25] सूर्य के साथ ही द्वादशादित्य और नवग्रह भी अंकित किए जाने

Received: 05.07.2022 **Accepted:** 24.08.2022 **Published**: 25.08.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre

ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.05.02.04
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

लगे | इससे स्पष्ट होता है कि सूर्य उपासकों की संख्या निरंतर बढ़ रही थी | आनन्दगिरी के अनुसार- "पूर्व मध्यकाल में सूर्य उपासकों के छः उपसम्प्रदाय प्रचलित हो गए थे |"[26]

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि सूर्य पूजा प्राचीन काल में प्रतीकों के माध्यम से प्रारम्भ होकर, प्रतिमाओं का निर्माण कर उन्हें मानवाकार रूप में विभिन्न प्रकार से पूजते हुए निरन्तर सभी राजवंशों के युग में विकास की ओर अग्रसर होती रही | अंततः, प्रकृति से सूर्य का घनिष्ठ सम्बंध प्रतीत होता है क्योंकि आज भी कतिपय पौधों की पत्तियाँ सूर्योदय के साथ खुलती हैं और सूर्यास्त के समय आपस में चिपक जाती हैं तथा कुछ पुष्प सूर्य की तरफ मुख करके ही खिलते हैं जिसका सटीक उदाहरण पीली पत्तियों वाला एक बड़ा पुष्प है, हम भारतवासी जिसे 'सूरजमुखी' के नाम से ही इंगित करते हैं |

सन्दर्भ - सूची

1. अवस्थी, रामाश्रय - खजुराहो की देव प्रतिमाएं, पृ० 167
2. चतुर्वेदी, श्रीनारायण - सूर्योपासना और ग्वालियर का विवस्वान मंदिर, पृ० 45
3. साम्ब पुराण - 29/2-6
4. चतुर्वेदी, श्रीनारायण - उपर्युक्त
5. ऋग्वेद - 1/164/11,12, 1/75/4, 4/30/4, 7/63/2
6. शतपथ ब्राह्मण - 7/4/1/10
7. अवस्थी, रामाश्रय - उपर्युक्त, पृ० 167-168
8. उपर्युक्त
9. उपर्युक्त, पृ० 138
10. वृहत्संहिता - 58/46-48
11. विष्णुधर्मोत्तरपुराण - अध्याय 67
12. अवस्थी, रामाश्रय - उपर्युक्त, पृ० 166
13. उपर्युक्त - पृ० 168
14. चतुर्वेदी, श्रीनारायण - उपर्युक्त, पृ० 46
15. अवस्थी, रामाश्रय - उपर्युक्त, 166
16. चतुर्वेदी, श्रीनारायण - उपर्युक्त, पृ० 46

Received: 05.07.2022 **Accepted:** 24.08.2022 **Published**: 25.08.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre

ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.05.02.04
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

17. उपर्युक्त, पृ० 45
18. उपर्युक्त
19. बाजपेई, के० डी० - प्राचीन कला में सूर्य का अंकन, पृ० 82
20. जोशी, नीलकंठ पुरुषोत्तम - पृ० 157
21. अवस्थी, रामाश्रय - उपर्युक्त, पृ० 168
22. उपर्युक्त, पृ० 160
23. उपर्युक्त, पृ० 169
24. चतुर्वेदी, श्रीनारायण - उपर्युक्त, पृ० 52-53
25. अवस्थी, रामाश्रय - उपर्युक्त, पृ० 170
26. चतुर्वेदी, श्रीनारायण - उपर्युक्त, पृ० 53

Received: 05.07.2022 **Accepted:** 24.08.2022 **Published**: 25.08.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.